महिला सशक्तिकरण में स्त्री केंद्रित कवयित्रियों का योगदान : वैदिक काल से अब तक

उज्वला विठ्ठल फडतरे शोधार्थी प्रा.रामकृष्ण मोरे कला, वाणिज्य एवं- विज्ञान महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे ई-मेल आईडी- ujwalaphadtare84@gmail.com

डॉ.सजित खांडेकर शोध निर्देशक राजमाता जिजाऊ शिक्षा प्रसारक मंडल के कला, वाणिज्य एवं विज्ञानमहाविद्यालयभोसरी, पुणे.

- **शोध संक्षेप :**

॥ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता: ॥ (मनु)

अर्थात जहाँ स्त्रियों की पूजा होती हैं, वहाँ देवता आनंदित होकर निवास करते हैं। सृष्टि की सुंदर रचयिता 'स्त्री' है। वैदिक काल से अब तक की विभिन्न कालखंडों में स्त्री केंद्रित कवयित्रियों ने महिला सशक्तिकरण में अपनी भूमिका अहम रखी। उन्होंने कविताओं के माध्यम से महिलाओं की आत्मनिर्भरता,स्वतंत्रता,सामाजिक न्याय,लैंगिक समानता एवं निर्णय लेने की क्षमता को सशक्त किया हैं।स्त्री केंद्रित कविवित्रियों द्वारा रचित कविताएँ सिर्फ साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि स्त्री सशक्तिकरण का माध्यम है;जो सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं समकालीन परिवर्तनों का भी साक्षी हैं ।साहित्यिक अपनी कलम की प्रतिभा से स्त्रियों की स्वतंत्रता,संघर्ष,अभिव्यक्ति को वाणी देती है ।

- **बीज शब्द :**

स्वानुभव,स्व-बोध,महिला सशक्तिकरण,आत्मनिर्भरता,स्वतंत्रता, जिजीविषा, दृष्टिकोण

- **प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य :**
  - विभिन्न कालखंडों में स्त्री-केंद्रित कवयित्रियों द्वारा अभिव्यक्त कविताओं के माध्यम से तत्कालीन स्त्रियों की स्थिति एवं महिला सशक्तिकरण में उनके योगदान को मुखरित करना ।
  - हिंदी एवं मराठी सहित भारतीय सभी भारतीय साहित्य में स्त्रियों की स्वतंत्रता अधिकार,निर्णय लेने की क्षमता औरा अस्मिता हेतु कविताओं का मूल्यांकन।
  - वेदकाल, आदिकाल, भक्तिकाल, आधुनिक काल और समकालीन काल की स्त्री केंद्रित कवयित्रियों द्वारा सामाजिक सुधारों की पहल ।
  - स्त्री केंद्रित कवयित्रियों की रचनाएँ सिर्फ साहित्य का सिर्फ एक भाग न बनकर समाज में महिलाकों के सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावशाली प्रेरणा स्त्रोत बनेकर शोधविषय की मूल तत्त्व साकार करेगी।

- **प्रस्तावना :**

साहित्य समाज का दर्पण है। स्त्रियों द्वारा रचित साहित्य उनकी संघर्षो, भाव-भावनाओं, सामाजिक परिवर्तनों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति देता हैं। भारतीय सभ्यता में 'स्त्री' आद्या है। सम्पूर्णता का दूसरा नाम है। इसलिए स्त्री, पुरुष की 'अर्धांगिनी' है। वैदिक काल से अब तक दिशादर्शक का पहिया बनकर अपने देश एवं समाज को राह दिखानेवाली, वेदकाल से ही समाज के केंद्र मे रहनेवाली, समाज को विकास की राह पर लाने के लिए अहम् भूमिका निभानेवाली स्त्रियाएँ अपनी विचारधाराओंसे खुद को मुखरित करने लगीं। आज तक पितृसत्ताक समाज एवं उनकी सीमाओं को अपनी कलम की माध्यम से चुनौती देकर प्रेरित भी करती है। आज शक्ति की केंद्र में भी नारी ही हैं।

अनादिकाल से ही वह पूजनीय रही है। इसलिए आज भी देवी की पूजा करते हुए निम्न श्लोक पढ़ा जाता है :

"या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥''

- **महिला सशक्तिकरण में स्त्री केंद्रित कवयित्रियों का योगदान :**

इस शोध में आगे बढ़ते वक्त सबसे पहले महिला सशक्तिकरण का अर्थ, उसके महत्त्व को समझना आवश्यक है ।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत रूप से इतना सक्षम बनाना है कि वे अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें और समाज में समान अधिकारों के साथ भागी बने।

इस प्रकार शैक्षिक,आर्थिक,सामाजिक,राजनीतिक, न्यायिक सशक्तिकरण जैसे मुख्य पहलूओं को महिलाओं में उजागर होते देखना जो उसके स्वयं के और समाज के प्रगति के लिए अनिवार्य हैं।

इस धरातल पर ज्ञान का स्रोत जहाँ प्रवाहित होता है,वह 'वेद' है और उसकी साक्षी है गौतमी, लोपामुद्रा, गार्गी, अपाला, विश्वतारा मैत्री जैसे विदुषियाँ !

विभिन्न कालखंड का विचार करें तो यह बात सही है कि पूर्व काल में नारी को समाज में पुरुषों के बराबर समान अधिकार थे।

वैदिक काल की महिलाएँ सिर्फ घरेलू जीवन में बंदिश न रहकर ज्ञान धर्म एवं साहित्य के माध्यम से समाज में नारी सशक्तिकरण एवं न्याय के लिए आज भी आदर्शवाद मानी जाती है ।वेदकालीन स्त्रियों की साहित्यिक रचनाएँ मूलतः ज्ञान, यज्ञ, उपासना, शिक्षा एवं आध्यात्मिक स्वतंत्रता युक्त थी।उन्होंने वेदों के मंत्रों की रचना एवं स्त्री-पुरुष समानता पर अधिक बल दिया;जो महिला सशक्तिकरण की योगदान के रूप में आदर्श है।

वेदों में धार्मिकता एवं नैतिकता स्थापना करने हेतु **गौतमी** अपने ऋचा में लिखती हैं -

"धर्म चर सत्यं वद ।" (ऋग्वेद-12.1.1)

धर्म का पालन करते हुए व्यक्ति को सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं।

ऋग्वेद मंडल एक सूक्त 179 में ऋषि अगस्त और उनकी पत्नी लोपामुद्रा के बीच एक संवाद मिलता है;जो गृहस्थ जीवन,स्त्री-पुरुष समानता और दांपत्य धर्म से संबंधित है;जो वेदों में महिला सशक्तिकरण और समानता की जड़ों को प्रमाणित करता हैं।

"नारीरपत्यं प्रजया बिभर्ति तमग्रुवोऽवसीदन्ति सम्राट्।
स नः पत्ये शं योररप्स्यस्मासु विश्वा पुष्यसि श्रियं धाः॥"
(ऋग्वेद1.179.3)

इन ऋचाओं में **लोपामुद्रा** कहती हैं -

स्त्री संतान और परिवार का पोषण करती है, लेकिन यदि पति गृहस्थ जीवन से विमुख हो जाए, तो यह संतुलन बिगड़ जाता है। इसलिए गृहस्थ धर्म का पालन आवश्यक है।

ब्रह्मवादिनी (उपाधि) गार्गी ने वैदिक काल की महिलाओं को शिक्षा की राह दिखाई।

गार्गी ने बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य से वेदांत एवं ब्रम्हज्ञान पर चर्चा करते हुए ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप पर निम्न प्रश्न पूछती हैं -

"किम् तदब्रम्ह?" (बृहदारण्यक उपनिषद 3.6)

इस प्रकार गार्गी तर्क एवं दर्शन के माध्यम से महिलाओं की बौद्धिक क्षमता को प्रमाणित करती हैं।

वेदकाल के पश्चात **आदिकाल** में संस्कृत साहित्य की प्रधानता तो थी साथ में अन्य भाषाओं में भी लेखन कार्य की शुरुआत हुई।

तीसरी-चौथी शताब्दी ई.के दौरान आंध्र देश के नागार्जुनकोंडा में ईक्ष्वाकु साम्राज्य की महिलाओं के स्थिति से उसे समय की महिलाओं के सशक्तिकरण का भी अंदाजा लगाया जा सकता है। उस साम्राज्य की महिलाओं ने एवं अन्य महिलाओं ने बौद्धधर्म की भक्त होते हुए बुद्ध के सम्मान में मठ और मंदिर बनवाए तथापि उनके संरक्षण में महिलाओं की झलक देखने मिलती हैं।

इस प्रकार आदिकाल (वीरगाथाकाल) में स्त्रियाँ वीरों की सहायक भूमिका में दिखती हैं , जो सशक्तिकरण की अहम भूमिका निभाती हैं। जैसे वातापी (बादामी) की चालुक्य रानियाँ, वेरिगी के चालुक्य रानी अय्याना महादेवी जो इनके ज्वलंत उदाहरण हैं। यह सामाजिक स्थिति क्षेत्र के अनुसार भी विभिन्न हैं।

उत्तर वैदिक काल से महिलाओं की स्थिति में पतन दिखाई देता है । मनु जैसे स्मृतिकारों के द्वारा महिलाओं पर कई प्रतिबंधात्मक निर्देश थोपे गए। उसके सभी अधिकारों पर रोक लगाई दी गई। परन्तु वैदिक युग का कुछ प्रभाव टिका हुआ था जिससे अशिक्षित, अल्प शिक्षित एवं निम्न वर्ग की स्त्रियाँ इसकी शिकार हुई। आदिकाल तक आते -आते पितृ सत्ताक एवं सामंती समाज के कारण में स्त्री' स्वतंत्रता से कब' जिंजीरों में कब बंधी गई, पता ही नहीं चला ! वे धीरे-धीरे स्वयं की रचनात्मका से विभक्त होती गई। उसे घर-गृहस्थी तक ही सीमित रखा गया।

जिससे वेदकालीन स्त्रियों की रचनाओं की तुलना में आदिकालीन स्त्रियों की रचनाएँ काफी कम मात्रा में उपलब्ध हैं।

डॉ.रामचंद्र शुक्ल जी के मतानुसार, "आदिकाल में स्त्रियाँ रचनात्मक हो सकती थी , लेकिन सामाजिक और साहित्यिक इतिहास में उन्हें हाशिए पर रखा। "

आदिकालीन इतिहास लेखन में पुरुष दृष्टिकोण उच्च होने के बावजूद भी मौखिक परंपराओं में लोकसंस्कृति, लोक परंपरा, लोक साहित्य में स्त्रियों की मौजूदगी प्रतीत होती हैं।

डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार, उन्होंने स्वीकार किया कि आधिकारिक साहित्य में स्त्रियों का योगदान छिपा हुआ है और इसे खोजने की आवश्यकता है।

फिर भी कुछ कवित्रियों के योगदान का उल्लेख छिपा न रहा।

मराठी साहित्य में **प्रारंभिक चरण** के दौरान भक्ति आंदोलन का आरंभ हुआ समाज सुधार का उद्देश्य सामने रखकर धार्मिक चेतना को बढ़ावा मिला। प्रारंभिक काल में मराठी साहित्य में स्त्री केंद्रित कवित्रियों का योगदान सीमित परंतु परिणामकारक रहा। आद्य मराठी कवयित्री महदम्बा (महदाईसा) जो वारकरी संप्रदाय की प्रमुख कवयित्री तथा मराठी भाषा की पहली स्त्री कवयित्री जानी जाती हैं। वह महिलाओं को पुरुषों के बराबर के अधिकार अपनी रचनात्मक के माध्यम से दिखाती हैं।
वे लिखती हैं –
"माझा विठ्ठल माऊली, सखा,बंधु अन् जीवलग "
कन्नड़ की मीरा कहा जानेवाली **अक्का महादेवी** भगवान 12 वीं शताब्दी की लिंगायत और शैव संप्रदाय की भगवान शिव की अनन्य भक्त और कन्नड़ भाषा की महान कवयित्री थीं।
मंत्रोगोप्य और योगांगत्रिविध ये लघु रचनाएँ साथ ही 430 वचन लिखे जो सहज रहस्यमय कविताओं का एक रूप है।
अक्का महादेवी स्त्री सशक्तिकरणकी प्रतीक थी जिन्होंने धर्म समाज और पुरुषप्रधान व्यवस्था को चुनौती दी और स्त्रियों को अपने आत्म स्वरूप की पहचान करनेकी प्रेरणा दी।
संत जनाबाई, सोयराबाई, संत ज्ञानेश्वर की बहन मुक्ताबाई, बोणेबाई, बाईसा जैसे महिलाएँ अपनी काव्यधारा से न केवल साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संघर्षों का चित्रण करती हैं;बल्कि समाज में स्त्रियों के अधिकारों की माँग भी चाहती है ,जो अपने समाज को नया आकार देना चाहती हैं।
साहित्य में **'भक्तिकाल'** की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। काल के **द्वितीय चरण 'मध्यकाल** ' के नाम से जाना जाता है। भक्तिकालीन काव्य में उसे समय की स्थिति के अनुसार काव्य रचना द्वारा जन जागरण किया।
सामाजिक रुढ़िया एवं परिस्थितियों के विरुद्ध जारी विकासात्मक भक्ति आंदोलन ने जनमानस की आवाज बनकर संपूर्ण भारतीय स्तर पर प्रचलित रुढ़ियों, सामाजिक - सांस्कृतिक विचारों के अनुसार रूपाकार ग्रहण किया।
महाराष्ट्र में वर्ण व्यवस्था को अस्वीकृत करने का मार्ग प्रशस्त बना।
संत कान्होपात्रा माता के व्यवसाय को न अपनाकर साक्षात विठ्ठल को ही तन - मन से “समर्पित हो गई।
पतित तू पाव ना
म्हणविसी नारायणा
जरी सांभाळी वचन
ब्रीद वागविसी जाण॥
याति शुद्ध नाहीं भाव
दुष्ट आचरण स्वभाव
मुखी नाम नाहीं
कान्होपात्रा शरण पायी॥“
अपने जीवन संघर्ष को धैर्य से सहन कर **संत बहिणाबाई** तत्कालीन महिलाओं को गृहस्थ जीवन की चुनौतियों का सामना करती संदेश देती हैं -
"प्रपंच परमार्थ चालवी समान
तिनेच गगन झेलियेले।"
राजस्थान में स्त्री मुक्ति का स्वर **मीरा** के रूप में उभरता हैं।
"भजन करस्या, सती न हास्यां,
मन मोह्यो घणनामी॥ "
सिसोदिया की कुलवधू **मीराबाई** ने सती प्रथा जैसे को कुप्रथा का जमकर विरोध कर स्त्री अभिव्यक्ति को अलग सा स्वर दिया।तथापि पितृसत्ताक समाज का विरोध कर विशेषत: स्त्री-जीवन को सक्षम बनाकर महिला सशक्तिकरण के लिए नया मार्ग दिखलाया।वह ईश्वर भक्ति में लीन रही।
समाज में खुद का अस्तित्व निर्माण करने का छोटा -सा प्रयास आगे चलकर **'आधुनिक नारी'** के रूप में व्यक्त हुआ जो कि परिणामस्वरूप वह अधिक सशक्त हुई।
पराधीन भारत की जंजीरों में फंसीं नारी पूर्णतया विकृत हो चुकी थीं। भारतीय नारी **आधुनिक युग** तक आते-आते सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह जैसी कुप्रथा में जकड़ी थी। समय करवट ले रहा था।स्वतंत्रता पूर्व 18 वीं शताब्दी के इस बर्बर युग में नारी के अनेक अत्याचारों को समाप्त कर स्त्री शिक्षा का प्रबंध किया। समय के साथ-साथ

महिलाओं की परिस्थितियों में व्यापक बदलाव आने लगा।काव्य में भी नारी का सजग रूप प्रस्तुत होने लगा। आधुनिक कवित्रियों ने अपने रचनाकारों में नारी जीवन के संघर्ष,उनकी आकांक्षाओं और स्वतंत्रता की चाह को प्रमुखता से उकेरा हैं।आज अनेक कवयित्रियों ने अपने कविताओं के माध्यम से भारतीय अवस्था के साथ नारी के स्वर को भी मुखरित किया हैं।प्रताप कुंवरिबाई, जुगलप्रिया, चन्द्रकलाबाई, सरस्वती देवी, निधि रानी, ज्वाला देवी, रत्नकंवरि बीबी, रामकुमारी देवी चौहान तथा सुभद्रा कुमारी चौहान आदि का नाम बड़े आदर के साथ लिए जाते हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान स्वतंत्रता की विधि पर पुरुषों के साथ नारी को भी आत्मदान करने के लिए प्रेरित करती हुई लिखती हैं-

"अबलाएँ उठ पड़ें देश में, करें युद्ध घमासान सखी,
पन्द्रह-कोटि असहयोगिनियाँ, दहला दें ब्रह्माण्ड सखी॥"

उनके 'झांसी की रानी' में रानी के साहस और वीरता का वर्णन है ;जो नारी शक्ति का प्रतीक है।

महादेवी वर्मा की रचनाएँ नारी के भीतर की संवेदना और समाज में उनकी स्थिति को प्रतिबिंबित करती हैं।

"पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला"

यह पंक्ति आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना को उजागर करती है ,जहाँ व्यक्ति अपने मार्ग पर अकेले चलने के लिए तैयार है ।उनकी रचनाएँ और समाज सुधार के प्रयास आज भी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं । वे नारीशक्ति, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की मिसाल थीं।

नयी कविता में कीर्ति चौधरी और शकुंतला माथुर नर -नारी की मुक्त साहचर्य का समर्थन तथा पारिवारिक जीवन के सत्य को कविताओं में दर्शाया हैं।

समकालीन हिंदी साहित्य की प्रमुख कवयित्री **अनामिका** अपनी काव्य के जरिए महिला सशक्तिकरण को एक नई दिशा देती है।

तितलियाँ मरती नहीं हैं,
मरती नहीं हैं उड़ानें आदमी के भीतर की।
अपना आकाश सिर्फ उन्नत करना होता है
और हिम्मत करनी होती है
पंख खोलने की।!
(मरती नहीं हैं उड़ाने - टोकरी में दिगन्त)

उपरि पंक्तियों में अनामिका तितली के प्रतीक के रूप में, स्वतंत्रता का, सौंदर्य का और सीमाओं को लांघने का एक नैतिक आदर्श प्रस्तुत करती हैं। अपने मूल्यों और स्वतंत्रता के प्रति अड़िग रहने का संदेश देती हैं।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों ने महिला सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हैं ।उनकी रचनाएँ महिलाओं के संघर्ष, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

सावित्रीबाई फुले,बहिणाबाई चौधरी, इंदिरा संत, शांता शेलके जैसे स्त्री केंद्रित कवयित्रियों की कविताएँ महिला सशक्तिकरण की भावना को प्रबल करती है।

बहिणाबाई चौधरी अपनी रचनाओं में महिलाओं के परिश्रम, त्याग और आत्मसम्मान को महत्त्व देती हैं।

अरे संसार संसार,
जसा तवा चुल्यावर,
आधी हाताला चटके,
मग मियते भाकर।"
('बहिणाबाईची गाणी')

ये पंक्तियाँ जीवन की कठिनाइयों को दर्शाती है, जहाँ संघर्ष के बाद ही सफलता मिलती है।

"शिका रे शिका, विद्येविना न सुटका,
विद्या सांगते कुणी घालावी कुठे वाटा।"

बहिणाबाई स्वयं शिक्षित नहीं थीं, लेकिन वे शिक्षा के महत्व को समझती थीं।उनकी कविताओं में यह संदेश मिलता है कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए ज्ञान अर्जित करना आवश्यक है।

"सीमित हो अवकाश क्षितिजाच्या वर्तुळांत,

उकळता लाव्हारस ऊन तयांत जळता।"

उपरि पंक्तियों द्वारा **शांता शेळके** एक शक्तिशाली दृश्य प्रस्तुत करती है, जो संघर्ष, अकेलेपन और धैर्य का प्रतीक है।

पदर तुझे झेलिते मी दान;
काळोखते भोवतालीं, जीव येतो उन्मळून
तरी ओठातून नाही "तुला शरण .... शरण."
(पदर भरून, गर्भरेशीम)

इन पंक्तियों में **कवयित्री इंदिरा संत** स्त्री के जीवन में आने वाले संघर्षों और चुनौतियों का उल्लेख करती हैं। वह दर्शाती हैं कि स्त्री अपने पल्लू में जीवन के सभी दान (आनंद, दुख, चुनौतियाँ) को स्वीकार करती है। चारों ओर अंधकार और संकट के समय में भी, उसके होंठों से "तुम्हारे शरण" जैसे शब्द नहीं निकलते, अर्थात वह हार नहीं मानती। यह कविता स्त्री के साहस, सहनशीलता और आत्मसम्मान का प्रतीक है। जो सशक्तिकरण का भी प्रतीक है।

ती असेल आता एक निखळ आदि स्त्री ताजी,
नुकतीच भुईतून वर आल्यासारखी
पूर्ण पार्थिव !
(पावसाला सुरुवात झाली आहे-निरंजन)

अरुणा ढेरे जी इन काव्यपंक्तियों द्वारा स्त्री का अस्तित्व केवल संबंधों में मर्यादित न होकर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में ,आत्मनिर्भरता को प्रकट करती है, जो महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है।

• उपसंहार:

स्त्री-केंद्रित कवयित्रियों ने वैदिक काल से वर्तमान तक महिला सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। इन कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री की भावनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को स्वर दिया, जिससे समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। प्रत्येक युग की नारी ने अपने भावावेग के कोमल-कांत संस्पर्श से युगीन साहित्य का सृजन कर अथवा फिर इस सब की प्रेरणा बनकर उसे आगे बढ़ाने का विशिष्ट कार्य किया है। आज तो वह जीवन के अन्य क्षेत्रों के समान साहित्य-सृजन के क्षेत्र में भी विशेष सक्रिय दिखाई दे रही है।

महिलाओं के सशक्तिकरण से ही परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अखिल विश्व का कल्याण है। विश्व के विकास में स्त्रियों की भागीदारी- यही आज की माँग है।

- **संदर्भ :**

- 1.टोकरी में दिगन्त थेरी गाथा :2014, अनामिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 02, दूसरा संस्करण- 2021
- 2. निरंजन,सुरेश एजन्सी,शैलेंद्र प्रकाशन,पुणे,दूसरा संस्करण,जुलाई 2011
- 3. Feminism (An Indian perspective),Dr. Mamta Agarwal, Galaxy book company, Jaipur,1st publication -2020
- 4. साहित्य अमृत,RNI No. 62112/95)ISSN 2455-1171, सितंबर 2014, मासिक
- 5. वैदिक सनातन धर्म, प्रमोद कुमार अग्रवाल, साहित्य अमृत, सितंबर- 2024
- 6. मराठी वाङ्मयाचा इतिहास:खंड-१ (आरंभापासून 1350 पर्यंतच्या कालखंडातील मराठी वाङ्मयाचा विवेचक इतिहास), तुळपुळे शं.गो., महाराष्ट्र साहित्य परिषद,पुणे, सुलभ मुद्रणालय 291, शनिवार पेठ, पुणे, पहला संस्करण – 1984
- 7. arihant,NTA,UGC
- 8. प्राचीन मराठी वाङ्याचा इतिहास, नसिराबादकर ल.रा.
- 9. www.hindi journal.com,volume-10, Issue-1-2024
- 10. https://www.google.com
- 11. https://wikipedia.org/wiki/ Akka_Mahadevi
- 12. https://www.santsahitya.in
- 13. https://mpgkpdf.com/2022/02/women_empowerment_in_hindi
- 14. स्त्री विमर्श-विविध पहलू, कल्पना वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज,प्रथम
- संस्करण – 2019

- 15. https://youtu.be/lrxBAympRlQ?si=MrNqWs4aJ7HgsCFG
- 16. https://hi.m.wikipedia.org/wiki(गर्भरेशीम)
- 17.https://ijassonline.in/HTML_Papers/International%20Journal%20of%
- 20Advances%20in%20Social%20Sciences__PID__2014-23.html?utm_ source=chatgpt.com
- 18. https://dastavej.in
- 19.https://en.wikipedia.org